



प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 13 अंक 4

www.csir.res.in

अप्रैल 2025

सीएसआईआर द्वारा स्वदेशी रूप से अभिकल्पित एवं विकसित हंसा-3 (एनजी) ट्रेनर एयरक्राफ्ट का प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, परमाणु ऊर्जा विभाग और अंतरिक्ष विभाग, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने हाल ही में वाणिज्यिक पायलट लाइसेंसिंग (सीपीएल) के लिए स्वदेशी "ट्रेनर एयरक्राफ्ट" तकनीक का आधिकारिक रूप से शुभारंभ किया और इस विमान के निर्माण में सहयोग के लिए निजी क्षेत्र को शामिल करने के निर्णय की भी घोषणा की।

यहां राष्ट्रीय मीडिया केंद्र में आयोजित एक समारोह में, मंत्री महोदय ने राष्ट्रीय मीडिया केंद्र, नई दिल्ली में वाणिज्यिक पायलट लाइसेंसिंग (सीपीएल) के लिए सीएसआईआर के स्वदेशी रूप से अभिकल्पित एवं विकसित हंसा-3 (एनजी) ट्रेनर विमान के प्रौद्योगिकी हस्तांतरण (टीओटी) को औपचारिक रूप दिया। हंसा-3



(एनजी) दो-सीटर ट्रेनर विमान का लाइसेंस मेसर्स पायनियर क्लीन एम्स प्राइवेट लिमिटेड को दिया गया है। डॉ. जितेंद्र सिंह ने स्वदेशी हंसा-3 (एनजी) के सफल प्रदर्शन और व्यावसायीकरण के लिए सीएसआईआर के वैज्ञानिकों के प्रयासों

की सराहना की और कहा कि यह विमान युवा पीढ़ी को पीपीएल (निजी पायलट लाइसेंस) और सीपीएल (वाणिज्यिक पायलट लाइसेंस) प्रशिक्षण प्रदान करने में फ्लाइट क्लबों की आवश्यकताओं को पूरा करेगा।

मंत्री महोदय ने भारतीय विमानन क्षेत्र की तेजी से बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए भारत में एक बड़े और विश्व स्तरीय उड़ान प्रशिक्षण पारिस्थितिकी तंत्र को विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि सीएसआईआर के स्वदेशी हंसा-3 (एनजी) विमान की उपलब्धता भारत के विमानन उद्योग को मजबूत करेगी और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के इस सपने को साकार करने में मदद करेगी कि भारत इस दशक के अंत तक एक प्रमुख विमानन केंद्र बन जाएगा और 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य हासिल होगा। डॉ. जितेंद्र सिंह ने विमानन प्रौद्योगिकियों के स्वदेशीकरण के माध्यम से स्टार्टअप्स और एमएसएमई के लिए महत्वपूर्ण अवसर के साथ-साथ महत्वपूर्ण रोजगार सृजन क्षमता पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि

"आत्मनिर्भर भारत" पहल के तहत स्वदेशी छोटे विमान निर्माण से बुनियादी ढांचे के विकास को समर्थन मिलेगा और भारत में विमानों की असेंबली और एकीकरण सहित उड़ान योग्य घटकों के उत्पादन में छोटे और मध्यम स्तर के निजी उद्यमियों को बढ़ावा मिलेगा।

उन्होंने इस पहल की सामाजिक-आर्थिक संभावनाओं की ओर भी ध्यान दिलाया, जिससे विमान निर्माण और विमान रख रखाव इंजीनियरिंग (एएमई) प्रशिक्षण के विभिन्न विषयों में आईटीआई और डिप्लोमा धारकों के लिए नौकरी पर प्रशिक्षण के माध्यम से रोजगार के अवसर पैदा होंगे। डॉ. जितेंद्र सिंह ने पायलट प्रशिक्षण के लोकतंत्रीकरण और विकेन्द्रीकरण पर सरकार के फोकस की पुष्टि की, जिससे पायलट प्रशिक्षण की लागत कम हो जाएगी

और युवाओं की आकांक्षाओं को पंख लगे, जिनमें से कई सामर्थ्य संबंधी मुद्दों के कारण पायलट बनने के अपने सपने को छोड़ देते हैं।

उन्होंने कहा, "निजी क्षेत्र के साथ सहयोग करके अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में मिली सफलता को अब बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए विमानन क्षेत्र में भी दोहराया जाएगा।"

उन्होंने उल्लेख किया कि भारत को अगले 15-20 वर्षों में 30,000 पायलटों की आवश्यकता होगी, जो वर्तमान में 6,000-7,000 पायलटों से अधिक है, क्योंकि भारतीय

यह उन्नत ईंधन-कुशल रोटैक्स 912iSc3 स्पोर्ट्स इंजन द्वारा संचालित है। विमान में 43 इंच की केबिन चौड़ाई और विद्युत संचालित फ्लैप के साथ एक बबल कैनोपी है, जो आधुनिक उपयोगकर्ता की आवश्यकताओं को पूरा करता है। यह 620 समुद्री मील की सीमा, 7 घंटे की एंडुरेंस और 98 नॉट्स कैलिब्रेटेड एयरस्पीड (केसीएस) की अधिकतम क्रूज गति के साथ उत्कृष्ट प्रदर्शन प्रदान करता है।

इस अवसर पर डॉ. एन. कलईसेलवी ने वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि एयरो

इंडिया 2025 में हंसा-3 (एनजी) का सफल उड़ान प्रदर्शन राष्ट्रीय आवश्यकता को पूरा करने के लिए स्वदेशी तकनीक विकसित करने के लिए सीएसआईआर की अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इन प्रयासों का उद्देश्य फ्लाइटिंग ट्रेनिंग ऑर्गनाइजेशन (एफटीओ) जैसे अंतिम ग्राहकों को सेवा प्रदान करना

है, जिससे सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण के लिए एक पूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र सुनिश्चित हो सके।

डॉ. अभय निदेशक पशिलकर ने बताया कि सीएसआईआर-एनएएल को देश भर के एफटीओ से 110 से अधिक हंसा-3 (एनजी) विमानों के लिए आशय पत्र (एलओआई) प्राप्त हुए हैं। घरेलू मांग और निर्यात क्षमता को पूरा करने के लिए, सीएसआईआर-एनएएल ने मेसर्स पायनियर क्लीन एम्प्स प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई के साथ साझेदारी की है, जो प्रति वर्ष 36 विमान बनाने के लक्ष्य के साथ एक विनिर्माण सुविधा स्थापित करेगा, जिसकी योजना आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्यों के अनुरूप सालाना 72 विमान बनाने की है।



एयरलाइनों के पास सामूहिक रूप से 1,700 से अधिक विमानों का ऑर्डर है। उन्होंने कहा कि देश में विश्व स्तरीय उड़ान प्रशिक्षण पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की तत्काल आवश्यकता है। डॉ. सिंह ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण विकास के लिए केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री के. राम मोहन नायडू को भी श्रेय दिया।

केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री के. राम मोहन नायडू ने अक्टूबर 2024 में सीएसआईआर-एनएएल के अपने हालिया दौर के बाद हंसा-3 (एनजी) विमान के व्यावसायीकरण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के लिए सीएसआईआर और सीएसआईआर-एनएएल के वैज्ञानिकों की सराहना की।

हंसा-3 (एनजी) विमान डिजिटल डिस्प्ले (ग्लास कॉकपिट) सिस्टम से सुसज्जित है और

सीएसआईआर की महानिदेशक द्वारा आर. जे सेंट्स स्टीविया प्रसंस्करण संयंत्र का उद्घाटन



डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव डीएसआईआर, भारत सरकार ने हाल ही में हिमाचल प्रदेश के ऊना जिले के सिंघा में आर. जे सेंट्स स्टीविया प्रसंस्करण संयंत्र का उद्घाटन किया।

इस संयंत्र को सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-आईएचबीटी), पालमपुर के तकनीकी सहयोग से विकसित किया गया है। यह अपनी तरह की अनूठी ग्रीन प्रसंस्करण इकाई है, जो सूखे स्टीविया पत्तों को स्टेवियोल ग्लाइकोसाइड पाउडर में प्रसंस्कृत करने की क्षमता रखती है।

स्टीविया एक कम कैलोरी वाला प्राकृतिक स्वीटनर है, जो सुक्रोज से लगभग 300 गुना मीठा होता है और जिसे डायबिटीज़ के रोगी भी सेवन कर सकते हैं। इससे पहले, डॉ. कलैसेल्वी ने स्टीविया के खेतों का दौरा किया, जहां संस्थान द्वारा विकसित "हिम स्टीविया" किस्म को 200 एकड़ से अधिक के क्षेत्र में लगाया गया है। उन्होंने नवीनतम खेत प्रबंधन तकनीकों का अवलोकन किया, जिसमें ड्रोन का उपयोग शामिल रहा। उन्होंने आईएचबीटी के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि संस्थान ने आर.जे सेंट्स को उत्तम पौध सामग्री से लेकर ग्रीन प्रसंस्करण तकनीक तक, समग्र समर्थन प्रदान किया।

भारत में डायबिटीज़ के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए, डॉ. कलैसेल्वी ने आर.जे सेंट्स को भी इस शानदार पहल के लिए बधाई दी। उन्होंने विकसित भारत की दिशा में संस्थान के प्रयासों की सराहना की।

इस अवसर पर, डॉ. सुदेश कुमार यादव, निदेशक सीएसआईआर-आईएचबीटी ने संस्थान द्वारा स्टीविया पर किए गए कार्यों का उल्लेख किया।

उन्होंने बताया कि दुनिया भर में 20-79 आयु वर्ग के लगभग 540 मिलियन लोग डायबिटीज़ के साथ जी रहे हैं और यह संख्या 2030 तक 645 मिलियन होने का अनुमान है।



भारत में अकेले 18 वर्ष से अधिक आयु के 77 मिलियन लोग डायबिटीज़ से पीड़ित हैं।

आमतौर पर डायबिटीज़ के रोगियों को चीनी का सेवन न करने की सलाह दी जाती है। यहाँ स्टीविया एक मीठे विकल्प के रूप में आता है। उन्होंने संस्थान द्वारा विकसित "हिम स्टीविया" किस्म की विशेषताओं पर चर्चा की, जिसमें 14.5% ग्लाइकोसाइड है। उन्होंने उच्च उत्पादकता और उपज के लिए उत्तम कृषि प्रथाओं और पत्तियों से शुद्ध स्टीवियोल ग्लाइकोसाइड निकालने के लिए ग्रीन प्रोसेस तकनीक पर जोर दिया।

इस अवसर पर, स्टीविया पर एक तकनीकी ब्रोशर का विमोचन किया गया और प्रगतिशील किसानों को उसकी गुणवत्तापूर्ण पौध सामग्री वितरित की गई। इसके साथ ही, धनवंतरी ग्राम संगठन, हिमाचल प्रदेश के साथ एक आसवन इकाई स्थापित करने हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

इस अवसर पर महालक्ष्मी माल्ट प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, हरियाणा के साथ प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

सीएसआईआर-सीरी द्वारा ईएसडीएम स्किल कॉन्क्लेव 2025 का आयोजन

सीएसआईआर-केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी), पिलानी में 19 फरवरी 2025 को इलेक्ट्रॉनिक्स सिस्टम डिज़ाइन एवं मैनुफैक्चरिंग (ईएसडीएम) स्किल कॉन्क्लेव 2025 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राजस्थान के माननीय राज्यपाल श्री हरिभाऊ बागडे जी ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम को सुशोभित किया। डॉ. मेघेन्द्र शर्मा, सचिव, विज्ञान भारती - राजस्थान, कॉन्क्लेव के विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। डॉ. पी. सी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी, पिलानी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। संस्थान के सभागार में आयोजित मुख्य समारोह में संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. चंद्रशेखर के अलावा स्थानीय जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारीगण (जिला कलेक्टर श्री रामअवतार मीणा, पुलिस अधीक्षक श्री शरद चौधरी, जनसंपर्क अधिकारी श्री हिमांशु शर्मा आदि), वरिष्ठ चिकित्सक एवं पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष डॉ. आर. पी. पारीक एवं मीडियाकर्मियों सहित शिक्षाविद्, संस्थान के वैज्ञानिक एवं अन्य सहकर्मी आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ परंपरागत रूप से राज्यपाल महोदय द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। इस अवसर पर सीरी विद्या मंदिर के छात्र-छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई।

अपने मुख्य अतिथीय संबोधन में माननीय राज्यपाल श्री हरिभाऊ बागडे ने नई शिक्षा नीति पर प्रकाश डालते हुए उसके



लाभों की चर्चा की। कौशल विकास कार्यक्रमों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है बस आवश्यकता उनके कौशल को निखारने की है जिसमें हमारे विश्वविद्यालय और सीरी जैसे शोध संस्थान अपनी भूमिका निभा सकते हैं। अपने संबोधन में उन्होंने भारतीय वेदों और भारतीय साहित्य के महत्व को भी रेखांकित किया। वैदिक साहित्य और सनातन संस्कृति की महत्ता को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे वेद और भारतीय साहित्य हमारे प्राचीन विज्ञान के उन्नत होने का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। राज्यपाल महोदय ने संस्थान के वैज्ञानिकों एवं अन्य सहकर्मियों से वेदों एवं भारतीय साहित्य के अध्ययन का भी आह्वान किया।

इससे पूर्व डॉ. पी. सी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने राज्यपाल महोदय का औपचारिक स्वागत किया। अपने स्वागत संबोधन में डॉ. पंचारिया ने संस्थान की प्रमुख शोध गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी दी।

विशिष्ट अतिथि डॉ. मेघेन्द्र शर्मा, सचिव, विज्ञान भारती-राजस्थान ने आयोजन की रूपरेखा और उद्देश्यों से अवगत कराया। यह कार्यक्रम विज्ञान भारती, राजस्थान के सहयोग से आयोजित किया गया।

मुख्य समारोह से पूर्व राज्यपाल महोदय द्वारा "विज्ञान की जीवन धारा" मूर्ति का अनावरण किया गया। यह मूर्ति विज्ञान एवं वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचारों द्वारा आम जनमानस को लाभान्वित करने का प्रतीक है।



सीएसआईआर-सीरी, पिलानी द्वारा विकसित इस अत्याधुनिक तकनीक से स्वास्थ्य परीक्षण

इसके साथ ही राज्यपाल महोदय ने संस्थान की इलेक्ट्रॉनिक विज्ञान दीर्घा और सेमीकंडक्टर प्रयोगशाला का भी अवलोकन किया। उन्होंने संस्थान की शोध गतिविधियों के लिए डॉ. पंचारिया की सराहना की। राज्यपाल महोदय ने विज्ञान दीर्घा में आगंतुक पंजिका में भी अपने विचार दर्ज किए।

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

मुख्य समारोह के दौरान संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित "अफ़ोर्डेबल पीसीआर" (Affordable PCR) प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण मेसर्स क्राफ्टज़ाइम्स बायोटेक प्रा. लि., कोयंबटूर, तमिलनाडु को किया गया। कंपनी के संस्थापक एवं निदेशक डॉ. श्रीधरन. जे. एवं सीएसआईआर-सीरी के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. मनीष मैथ्यु, प्रमुख, टीबीडी ने प्रौद्योगिकी हस्तांतरण संबंधी दस्तावेजों

और आणविक जांच को अधिक सुलभ और किफायती बनाया जा सकेगा। इस अवसर पर प्रौद्योगिकी विकासकर्ता श्री नवजोत कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक भी उपस्थित थे।

अतिथि सम्मान

समारोह के अंत में संस्थान के निदेशक डॉ. पी. सी. पंचारिया ने मुख्य अतिथि माननीय राज्यपाल श्री हरिभाऊ बागडे को संस्थान की ओर से शॉल एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। डॉ. पंचारिया ने विशिष्ट अतिथि डॉ. मेघेन्द्र शर्मा को भी शॉल एवं स्मृति चिह्न भेंट किया।

राज्यपाल महोदय ने स्मृति स्वरूप संस्थान प्रांगण में पौधारोपण भी किया। सभागार में आयोजित समारोह का संचालन डॉ. विषांत, प्रधान वैज्ञानिक ने किया।

इस अवसर पर प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी

का भी आयोजन किया गया, जिसमें सीएसआईआर-सीरी द्वारा विकसित अत्याधुनिक तकनीकों और नवाचारों का प्रदर्शन किया गया, जो उद्योग और समाज दोनों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे।

‘ईएसडीएम स्किल कॉन्क्लेव 2025’ में औद्योगिक क्षेत्र के विशेषज्ञों, नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं ने भाग लिया और भारत के ईएसडीएम क्षेत्र के विकास की संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया।

एक-दिवसीय ईएसडीएम स्किल कॉन्क्लेव 2025 का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

सीएसआईआर-आईआईटीआर ने हीरक जयंती के अवसर पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया



सीएसआईआर-भारतीय विषयज्ञान अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-आईआईटीआर), लखनऊ ने अग्रणी अनुसंधान और नवाचार के 60 उल्लेखनीय वर्षों के उपलक्ष्य में हीरक जयंती समारोह के हिस्से के रूप में 4 अप्रैल 2025 को विशेष व्याख्यान का आयोजन किया। इस व्याख्यान का आयोजन प्रतिष्ठित आईआईटीआर हीरक जयंती विशेष संबोधन (आईडिया) श्रृंखला के तहत किया गया।

इस कार्यक्रम में सुविख्यात प्रोफेसर कटेश वी. कट्टी का विचारोत्तेजक व्याख्यान हुआ। प्रोफेसर कट्टी, जिन्हें वैश्विक स्तर पर ग्रीन नैनोटेक्नोलॉजी के जनक के रूप में जाना जाता है, वर्तमान में रेडियोलॉजी के प्रोफेसर के पद पर हैं और अमेरिका के कोलंबिया के मिसौरी विश्वविद्यालय में ग्रीन नैनोटेक्नोलॉजी संस्थान के निदेशक के रूप में कार्य करते हैं। उन्होंने इस अवसर पर अपने विशेष संबोधन में नैनो-आयुर्वेदिक उपचारों के विकास पर गहन अंतर्दृष्टि साझा

की, कैंसर के उपचार और एंटीबायोटिक दवा की खोज में उनकी परिवर्तनकारी क्षमता पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला, जिसमें प्रीक्लीनिकल और क्लीनिकल दोनों निष्कर्षों पर जोर दिया गया।

सत्र की अध्यक्षता सीएसआईआर-आईआईटीआर के निदेशक डॉ. भास्कर नारायण ने की, जिन्होंने अध्यक्षीय भाषण दिया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि आईडिया सीरीज सीएसआईआर-आईआईटीआर के बौद्धिक और अकादमिक प्रयासों की आधारशिला बनी हुई है, जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी में क्रांतिकारी विचारों पर चर्चा और प्रसार करने के लिए अग्रणी वैज्ञानिकों, दूरदर्शी शोधकर्ताओं और अग्रिम सोच वाले विशेषज्ञों को लगातार एक साथ लाती है। उन्होंने उल्लेख किया कि इस

तरह के प्रेरक जुड़ावों के माध्यम से, संस्थान न केवल अपनी विरासत का सम्मान करता है बल्कि अनुसंधान को आगे बढ़ाने के अपने मिशन को भी मजबूत करता है जिसका एक ठोस सामाजिक प्रभाव है। सहयोग, संवाद और वैज्ञानिक जांच को बढ़ावा देकर, सीएसआईआर-आईआईटीआर देश और दुनिया के लिए एक स्वस्थ, अधिक टिकाऊ भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना जारी रखता है। इस व्याख्यान में संस्थान के कार्मिकों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं पुनरुद्धार विषय पर चार दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रदर्शनी का आयोजन

सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने विश्व विरासत दिवस के अवसर पर सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और पुनरुद्धार विषय पर चार दिवसीय एक राष्ट्रीय कार्यशाला और प्रदर्शनी का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन

सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने मुख्य अतिथि प्रोफेसर (डॉ.) संजय कुमार मंजुल, अपर महानिदेशक, एसआई और विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर (डॉ.) अरविन मंजुल, निदेशक, विश्व धरोहर, एसआई की उपस्थिति में किया। प्रदर्शनी का उद्घाटन औपचारिक रिबन काटने के साथ हुआ,

जिसमें पारंपरिक निर्माण सामग्री, विरासत संरक्षण उपकरण और इंटरैक्टिव प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया। इस कार्यक्रम में आईआईटी, अभियांत्रिकी महाविद्यालयों, शोध प्रयोगशालाओं और उद्योगों से जुड़े व्यक्तियों ने भाग लिया। इस अवसर पर अपने सम्बोधन में प्रोफेसर प्रदीप कुमार ने स्मारकों, मंदिरों और संसद जैसी प्रतिष्ठित

संरचनाओं के संरक्षण की नैतिक जिम्मेदारी पर जोर दिया और परंपरा और आधुनिकीकरण के बीच सेतु की आवश्यकता पर बल दिया।

प्रो. (डॉ.) संजय मंजुल ने विरासत के प्रति सीबीआरआई की प्रतिबद्धता की सराहना की और पर्यावरण क्षरण, भौतिक

केवल खुदाई नहीं है अपितु यह विज्ञान के माध्यम से सभ्यता की खोज है। सिनौली से योद्धाओं की कब्रें और रथ जैसे ज्वलंत दृश्य और खोजों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने अपने भाषण में तकनीक-संचालित संरक्षण पर विशेष जोर दिया।

प्रो. अरविंद मंजुल ने एसआई की वैश्विक संरक्षण पहलों, सीबीआरआई के साथ सहयोगी परियोजनाओं और सिनौली उत्खनन के व्यापक महत्व पर बात की। उन्होंने अपने वक्तव्य में विश्व धरोहर स्थलों के प्रबंधन के लिए अंतर्विषयी दृष्टिकोण पर जोर दिया।

इस सत्र का संचालन संस्थान की



क्षय और जलभराव जैसी प्रमुख संरक्षण चुनौतियों को रेखांकित किया। इसके बाद उन्होंने "सिनौली की खुदाई में प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग से एक आदर्श बदलाव" शीर्षक पर एक आकर्षक व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने जीपीआर, लिडार और डिजिटल प्रलेखन जैसे उन्नत तरीकों पर प्रकाश डाला गया, जिसने पुरातात्विक अन्वेषण में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। उन्होंने कहा कि उत्खनन अब

वरिष्ठ वैज्ञानिक हिना गुप्ता ने किया। डॉ. देबदत्ता घोष ने हेरिटेज संरचनाओं पर डीएसटी समर्थित सीओई मिशन का परिचय दिया, जबकि इंजीनियर सिद्धार्थ बेहेरा ने कहा कि यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। उन्होंने ताजमहल और सोमनाथ मंदिर सहित प्रमुख विरासत स्थलों और मालदीव में एक अंतरराष्ट्रीय परियोजना में हेरिटेज और विशेष संरचना समूह के काम के बारे में जानकारी साझा की।



डॉ. भरत सिंह चौहान ने प्रो. संजय मंजुल का परिचय कराया, जबकि डॉ. सुमन कुमार ने प्रो. अरविंद मंजुल का परिचय कराया।

इस अवसर पर आर्किटेक्ट अनूप ने विद्यार्थियों के लिए एक डिजाइन प्रतियोगिता की घोषणा। इसके बाद एक नए हेरिटेज डॉक्यूमेंटेशन वेब ऐप और सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की आधिकारिक वेबसाइट का शुभारंभ किया गया। तत्पश्चात एमेरिटस साइंटिस्ट डॉ. अचल



मित्तल ने भी छात्रों को हेरिटेज साइंस पर एक प्रेरक चर्चा में शामिल किया।

सत्र समापन पर मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि को स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। अंत में मुख्य वैज्ञानिक श्री नदीम अहमद द्वारा

धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। उन्होंने आयोजकों और प्रतिभागियों के प्रयासों की सराहना करते हुए सभी का आभार व्यक्त किया।

इस कार्यशाला में व्यावहारिक सत्र, तकनीकी प्रदर्शन और विशेषज्ञ व्याख्यानों के साथ-साथ भारत की विरासत को संरक्षित करने में सहयोग और नवाचार को बढ़ावा देने विशेष ज़ोर दिया गया।

इस पहल के माध्यम से सीएसआईआर-सीबीआरआई देश की सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है।

सीएसआईआर-आईआईआईएम ने आयुष पद्धति के तहत एक बहु-हर्बल उपचार को मान्य करने के लिए अनुसंधान सहयोग पर हस्ताक्षर किए

सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान (सीएसआईआर-आईआईआईएम), जम्मू के निदेशक डॉ. ज़बीर अहमद और केरल स्थित कंपनी, मेसर्स पंकजाकस्थूरी इंडिया (पी) लिमिटेड, के संस्थापक और प्रबंध निदेशक पद्मश्री डॉ. जे. हरेन्द्रन नायर ने एक प्रायोजित शोध परियोजना के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किया। यह सहयोग आयुष ढांचे के तहत ब्रॉन्कियल अस्थमा के प्रबंधन के लिए अभिकल्पित किए गए पॉली-हर्बल फॉर्मूलेशन के पूर्व-नैदानिक सत्यापन पर केंद्रित है।

समझौते पर औपचारिक रूप से सीएसआईआर-आईआईआईएम की ओर से डॉ. ज़बीर अहमद और मेसर्स पंकजाकस्थूरी इंडिया (पी) लिमिटेड की ओर से डॉ. जे. हरेन्द्रन नायर ने हस्ताक्षर किए।

यह समझौता हस्ताक्षर कार्यक्रम सीएसआईआर-आईआईआईएम टीम के प्रमुख सदस्यों की उपस्थिति में हुआ, जिनमें अब्दुल रहीम (मुख्य वैज्ञानिक और प्रमुख, आरएमबीडी एंड आईएसटी), डॉ. नवेद काजी, प्रमुख (एनपीएमसी), डॉ. पी.पी. सिंह (वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, एनपीएमसी), डॉ. प्रसून गुप्ता (वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, एनपीएमसी), डॉ. राज किशोर राय (वरिष्ठ वैज्ञानिक और प्रमुख, क्यूएमआई),



डॉ. एम.के. वर्मा (प्रभारी, डीटीएल), डॉ. बूबालन जी (वैज्ञानिक, फार्माकोलॉजी), डॉ. रामजयन पी (वैज्ञानिक, फार्माकोलॉजी), डॉ. लव शर्मा (वैज्ञानिक, आरएमबीडी एंड आईएसटी), और डॉ. शेख रईस रफीक (वाईआई, आरएफ, फार्माकोलॉजी) शामिल थे।

इस समारोह में पंकजाकस्थूरी का प्रतिनिधित्व किशन चंद (कार्यकारी निदेशक) और डॉ. एम.ए. नांबी (समन्वयक, अनुसंधान परियोजनाएं) ने किया।

हस्ताक्षर समारोह से पहले, डॉ. पी.पी. सिंह ने सीएसआईआर-आईआईआईएम की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए एक प्रस्तुति दी। तत्पश्चात मेसर्स पंकजाकस्थूरी इंडिया (पी) लिमिटेड की ओर से समाज को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से अपनी सीएसआर पहलों को प्रदर्शित करते हुए एक संक्षिप्त

वीडियो प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर एक प्रवक्ता ने विस्तार से बताया कि इस साझेदारी का उद्देश्य आयुष पद्धति के तहत पंकजाकस्थूरी के पॉली-हर्बल फॉर्मूलेशन को वैज्ञानिक रूप से मान्य करना है, जिसमें पारंपरिक ज्ञान को अत्याधुनिक वैज्ञानिक तरीकों के साथ मिलाकर अभिनव स्वास्थ्य सेवा समाधान तैयार करना है। परियोजना के हिस्से के रूप में, सीएसआईआर-आईआईआईएम विस्तृत फाइटोकैमिकल मानकीकरण, इन-विट्रो बायोएसे, इन-वीवो अध्ययन और विषाक्तता मूल्यांकन करेगा।

इस अवसर पर डॉ. ज़बीर अहमद ने इस बात पर जोर दिया कि यह सहयोग आयुष उत्पादों के वैज्ञानिक सत्यापन में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसे आयुष मंत्रालय और भारत सरकार का समर्थन प्राप्त है।

उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि यह साझेदारी स्थिरता और सामुदायिक कल्याण के लिए साझा प्रतिबद्धता को दर्शाती है, जिसमें पारंपरिक दवाओं को आधुनिक शोध के साथ जोड़ने के लिए विविध विशेषज्ञता का संयोजन किया गया है।

तत्पश्चात पंकजाकस्थूरी के प्रबंध निदेशक डॉ. जे. हरेंद्रन नायर ने कहा कि सीएसआईआर-आईआईआईएम जैसे प्रतिष्ठित संस्थान के साथ सहयोग करने से

उनके उत्पादों की रेंज में पहले से ही स्थापित जनता का विश्वास बढ़ेगा। इस भावना को दोहराते हुए, पंकजाकस्थूरी के कार्यकारी निदेशक श्री किशन चंद ने सीएसआईआर-आईआईआईएम की वैज्ञानिक टीम के साथ विस्तृत चर्चा करने के बाद अपनी संतुष्टि साझा की, जो परियोजना के क्रियान्वयन का नेतृत्व करेगी।

इस कार्यक्रम का आयोजन आरएमबीडी एंड आईएसटी अनुभाग द्वारा किया गया

था, जिसका मार्गदर्शन आरएमबीडी एंड आईएसटी के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. अब्दुल रहीम ने किया, इस पूरे कार्यक्रम का नेतृत्व सीएसआईआर-आईआईआईएम, जम्मू के निदेशक डॉ. ज़बीर अहमद ने किया। यह सहयोग एकीकृत चिकित्सा को आगे बढ़ाने और परंपरा और विज्ञान में निहित स्वास्थ्य नवाचारों को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध होगा।

गुजरात कैमिकल एसोसिएशन ने सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई, भावनगर का दौरा किया

गुजरात कैमिकल एसोसिएशन (जीसीए), अहमदाबाद के सत्रह सदस्यों ने उद्योग-अनुसंधान सहयोग को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, अध्यक्ष डॉ. जैमिन आर. वासा के नेतृत्व में 25 मार्च, 2025 को भावनगर में सीएसआईआर-केंद्रीय नमक व समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई), भावनगर का दौरा किया।

इस यात्रा का उद्देश्य रासायनिक उद्योगों और सीएसआईआर-

सीएसएमसीआरआई के बीच सहयोग के अवसरों का पता लगाना था। सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई के निदेशक डॉ. कन्नन श्रीनिवासन ने प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया और जीसीए तथा अन्य संबद्ध उद्योगों के साथ दीर्घकालिक सहयोग की इच्छा

व्यक्त की। सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई के व्यवसाय विकास एवं सूचना प्रबंधन प्रभाग के प्रमुख डॉ. कमलेश प्रसाद ने संस्थान के अनुसंधान एवं तकनीकी दक्षता का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर प्रधान वैज्ञानिक डॉ. केबी पांडे ने बताया कि जीसीए

और डॉ. जैमिन वासा फाउंडेशन, अहमदाबाद के साथ दो समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए। उन्होंने कहा कि इस पहल से प्रभावशाली सहयोग और औद्योगिक चुनौतियों से निपटने के लिए विकास का मार्ग प्रशस्त होने के साथ-साथ गुजरात में रसायन उद्योग के विकास में भी योगदान मिलने की उम्मीद है।



सीएसआईआर-आईआईसीटी में राष्ट्रीय विज्ञान संगोष्ठी का आयोजन



सीएसआईआर-भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद में 'विकसित भारत के निर्माण में विज्ञान की भूमिका' विषय पर दिनांक 10 मार्च 2025 को राष्ट्रीय विज्ञान संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भिलाई के निदेशक प्रो. राजीव प्रकाश, विशिष्ट अतिथि के रूप में आईसीएमआर – राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद के निदेशक डॉ. भारती कुलकर्णी एवं वक्ता के रूप में प्रो. विनोद तिवारी, रसायन शास्त्र विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय आमंत्रित थे। संगोष्ठी में आईआईसीटी एवं हैदराबाद में अवस्थित विभिन्न कार्यालयों के वैज्ञानिकों, कर्मचारियों, शोधार्थियों के साथ-साथ विभिन्न राज्यों से

आए प्रतिभागियों ने भाग लिया। संगोष्ठी का परिचय देते हुए डॉ. एस. पी. सिंह, वरि. प्रधान वैज्ञानिक ने कहा कि हैदराबाद खानपान, विज्ञान और हिंदी तीनों के लिए देश और दुनियाभर में प्रसिद्ध है। वर्तमान समय में देश जब विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ रहा है और विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था की महत्वाकांक्षा के लिए प्रयासरत है। इसकी प्रतिनिधि भाषा हिंदी में भी कई संभावनाएँ उभर रही हैं। यह बोलचाल की भाषा से आगे बढ़कर ज्ञान-विज्ञान, अनुसंधान, रोजगार की भाषा बन रही है। माननीय निदेशक महोदय की अगुआई में यह संगोष्ठी इसी का एक छोटा-सा



प्रयास है कि लोग हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से ज्ञान-विज्ञान पर चर्चा शुरू करें। आगे उन्होंने कहा कि हम आप सभी का आभार जताते हैं कि आप हमारे इस छोटे से प्रयास का साथी बनें।

संस्थान के प्रशासन नियंत्रक श्री एम. आनंद कुमार संगोष्ठी में राजभाषा कार्यान्वयन के बारे में बताते हुए कहा कि निदेशक महोदय की बड़े दिनों से इच्छा थी कि हिंदी भाषा में विज्ञान पर राष्ट्रीय संगोष्ठी होनी चाहिए।



हमारा कार्यालय न केवल प्रशासनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन का अनुपालन कर रहा है बल्कि विज्ञान में भी हिंदी के महत्व को समझता है। अतः आईआईसीटी में प्रशासन, प्रबंधन एवं विज्ञान तीनों में हिंदी देखी जा सकती है। इसके लिए हमारे कार्यालय को नराकास, हैदराबाद के द्वारा वर्ष 2024 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है। आईआईसीटीयन भाषा के क्षेत्र में नवीन प्रशिक्षण प्रौद्योगिकियों के साथ आगे बढ़ रहे हैं। आईआईसीटीयन प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ से आगे बढ़ते हुए पारंगत का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं वहीं गूगल ट्रांसलेशन से आगे बढ़ते हुए भाषिणी, अनुवादिनी और कंठस्थ 2.0 का इस्तेमाल कर रहे हैं।

संस्थान के निदेशक डॉ. डी. श्रीनिवास रंढी ने मंच पर उपस्थित अतिथियों एवं प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि आजादी के अमृतकाल में सन् 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य रखा गया है। विकसित भारत विज्ञान के बिना संभव नहीं है। विज्ञान देश के उद्योगों को बढ़ावा देता है। जीवन-स्तर को ऊंचा उठाता है। हमें तार्किक बनाता है। अतः विकसित भारत के निर्माण के लिए विज्ञान को हर वर्ग में ले जाने की आवश्यकता है। हिंदी भाषा में विज्ञान

पर आयोजित यह संगोष्ठी हमारे इसी सोच का फल है। मैं आमंत्रित अतिथियों का इस संगोष्ठी के महत्वपूर्ण हिस्सा बनने के लिए आभारी हूँ तथा आशा करता हूँ कि प्रतिभागी संगोष्ठी से लाभान्वित होंगे।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि भारत के राष्ट्रीय महत्व की संस्था भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भिलाई के निदेशक प्रो. राजीव प्रकाश जी ने संगोष्ठी के विषय 'विकसित भारत में विज्ञान की भूमिका' के संदर्भ में कहा कि विकसित देशों में विज्ञान की पढ़ाई अपनी ही भाषा में होती है। उन्होंने अपना अनुभव साझा करते हुए कहा कि देशभर से होनहार विद्यार्थी राष्ट्रीय स्तर की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करके आईआईटी में दाखिला पाते हैं, परंतु वहां अंग्रेजी भाषा में अध्ययन-अध्यापन के कारण प्रायः इन होनहार विद्यार्थियों के प्रदर्शन में गिरावट देखी जाती है। इसके उपाय के रूप में संकाय सदस्यों ने हिंदी भाषा में व्याख्यान की पहल की, जिसके सकारात्मक परिणाम मिले हैं। उन्होंने आशा जताई कि विकसित भारत का लक्ष्य वर्ष 2047 तक पाठ्यपुस्तक स्तर पर भी अपनी भाषा में उच्च शिक्षण में आगे बढ़ेंगे। उन्होंने जोर देकर कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा से आधुनिक ज्ञान को जोड़ते हुए विकसित भारत की यात्रा पूरी होगी। उदाहरण के रूप में प्रकाश जी ने आईआईटी भिलाई परिसर

के निर्माण में परंपरा और आधुनिकता के समन्वय का उल्लेख किया। कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, ज्योतिषी, स्थापत्य, शिल्प, सिंचाई, कर्मकांड आदि में भारत की महान विरासत रही है। यह ज्ञान लोक में मौजूद है, जिसका वहन पीढ़ी-दर-पीढ़ी हो रहा है। लोक में व्याप्त इस समृद्ध परंपरा के अभ्यास के लिए हमने अपने संस्थान में अवकाश मुहैया कराया है। अंत में निदेशक, आईआईटी भिलाई ने कहा कि सतत् विकास के लिए उत्कृष्ट विज्ञान विकसित भारत का मनोरथ पूरा करेगा।

संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि डॉ. भारती कुलकर्णी, निदेशक, आईसीएमआर – राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद ने कहा कि 'जय जवान-जय किसान-जय विज्ञान-जय अनुसंधान' विकसित भारत की संकल्पना को साकार करेगा। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय इसके लिए प्रतिबद्ध है। लोगों को बेहतर और किफायती स्वास्थ्य सुविधा मुहैया कराने के लिए आईसीएमआर – एनआईएन स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काम कर रहा है। आज भी भारत के ग्रामीण इलाकों की गर्भवती महिलाएं एनीमिया के खतरे से जूझ रही हैं। इसके शिकार बच्चे भी हो रहे हैं। विदित है कि पहले ही साल में बच्चों का ब्रेनग्रोथ अधिक होता है, जो कि एनीमिया के कारण बाधित हो जाता है।



भारत की बड़ी जनसंख्या मोटापे का शिकार है, जिसका असर उनके व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनों जीवन पर देखने को मिल रहा है। यह कई बीमारियों की जनक भी है। खाद्य प्रौद्योगिकी के अंतर्गत इसके निवारण की दिशा में काम करते हुए हमारा संस्थान पोषक से भरपूर खाद्य विकास पर कार्य कर रहा है।

संगोष्ठी के आमंत्रित वक्ता प्रो. विनोद तिवारी, रसायन विज्ञान विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने कहा कि रसायन विज्ञान का विकसित भारत के निर्माण में अहम् भूमिका है। उन्होंने रसायन विज्ञान के महत्व का उल्लेख करते हुए कहा कि मानव सभ्यता के विकास से लेकर रसायन का उल्लेख लोगों के संबंधों को दर्शाने में भी होता है। अच्छा/खराब रिश्ते को व्यक्त करने के लिए अक्सर कहा जाता है कि 'उन दोनों के बीच की कैमैस्ट्री अच्छी है/ उन दोनों के बीच की कैमैस्ट्री ठीक नहीं है।' व्याख्यान में प्रो. तिवारी ने जोर देकर कहा कि हमारे पूर्वजों को सदियों से रसायनों की जानकारी थी। हनुमान चालीसा में जिक्र है –

“अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता,
अस बार दीन जानकी माता
राम रसायन तुम्हरे पासा,
सदा रहो रघुपति के दासा।”

यहां राम रसायन संभवतः उन रासायनिक तत्वों को दर्शाता है, जिनकी जानकारी पूर्वजों को थी। यहां नौ निधि संभवतः स्वर्ण, रजत, ताम्र, लौह, लेड, टिन, पारद, कार्बन और गंधक हैं। अनुसंधान में पाया गया है कि भारत में स्वर्ण की प्राचीन खानें थीं। इससे बने आभूषण और अन्य चीजें प्राचीन काल से भारतीयों के लिए आकर्षण रहे हैं। रजत के बर्तनों के इस्तेमाल को भारत में प्रधानता दी गई है तथा इसे शुद्ध माना गया है। हमारे पूर्वज रजत के वैज्ञानिक महत्व से परिचित थे। सिकंदर महान जब फारस और फिनीशिया जीतते हुए भारत पर हमला करता है तो उसके सैनिकों पर आंतों की बीमारियों ने धावा बोल दिया, जिससे वे लोग बहुत घबरा गए। सैनिकों ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया और घर लौटने की इच्छा प्रकट की। इन बीमारियों का एक रहस्य था। बात यह थी कि सिकंदर की सेना के अफसरों पर इन बीमारियों का तनिक भी असर नहीं हो रहा था, हालांकि वे लोग भी साधारण सैनिकों की तरह लड़ाई की सभी मुसीबतों का बोझ उठा रहे थे। इस घटना के 2000 साल बाद वैज्ञानिकों को इसका भेद पता चला। बात यह थी कि साधारण सैनिकों के गिलास टिन के बने होते थे जबकि अफसर लोग रजत के गिलासों में पानी पीते थे। रजत पानी में घुलकर एक कोलाइड विलयन बनाता है जो रोगजनक

कीटाणुओं को मार देता है। हालांकि जल में रजत की विलयनशीलता बहुत कम है, परंतु कीटाणुओं को मारने के लिए इतनी मात्रा ही काफी होती है। इसी तरह एक से अधिक रोचक किस्सों, उदाहरणों के द्वारा प्रो. तिवारी ने विभिन्न रसायनों की जानकारी प्रदान की।

भोजनावकाश के बाद सामान्य विज्ञान पर आधारित प्रश्नोत्तरी सत्र में विज्ञान पर आधारित प्रश्न पूछे गए, जिसमें भारतीय वैज्ञानिकों के नाम पर बंटी टीमों भटनागर, कुरियन, विक्रम साराभाई, सत्येंद्र बोस, आर्यभट्ट, भाष्कर, सी.वी. रमन, रामानुजन, स्वामीनाथन, मेघनाद साहा में लोगों ने भाग लिया। इसमें सामान्य विज्ञान पर आधारित जानकारी से भरपूर रोचक और दैनिक जीवन से जुड़े प्रश्न पूछे गए, जिसका लोगों ने भरपूर आनंद उठाया। प्रश्नोत्तरी के बाद विजयी टीमों के सदस्यों को संगोष्ठी के आमंत्रित वक्ता प्रो. विनोद तिवारी और अध्यक्ष डॉ. सूर्य प्रकाश सिंह के कर-कमलों से पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रश्नोत्तरी सत्र का संचालन संस्थान के हिंदी अधिकारी डॉ. सौरभ कुमार एवं कनिष्ठ हिंदी अनुवादक श्री आदर्श कुमार के द्वारा किया गया। अंत में श्री आदर्श कुमार के द्वारा संस्थान के निदेशक, समिति के सदस्यों एवं संगोष्ठी के अतिथियों, प्रतिभागियों एवं इसके आयोजन में सहायक रहे सभी लोगों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

सीएसआईआर-नीरी ने अपना 67 वां स्थापना दिवस मनाया

सीएसआईआर-राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-नीरी) ने 8 अप्रैल 2025 को अपना 67वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। डॉ. कन्नन श्रीनिवासन, निदेशक, सीएसआईआर-केंद्रीय नमक एवं समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई), भावनगर, ने मुख्य अतिथि के रूप में इस कार्यक्रम में भाग लिया और अपना स्थापना दिवस संबोधन दिया। सीएसआईआर-नीरी के निदेशक डॉ. एस. वेंकट मोहन ने समारोह की अध्यक्षता की।

डॉ. कन्नन श्रीनिवासन ने " विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में सहयोग और भागीदारी का महत्व " विषय पर अपने स्थापना दिवस व्याख्यान में उन सफलता की कहानियों को साझा किया जिनमें सहयोग किस प्रकार महत्वपूर्ण परिणामों में परिवर्तित हो सकता है, का उल्लेख किया गया था। उन्होंने सार्थक प्रभाव पैदा करने के लिए संभावित हितधारकों के साथ सहयोग के लिए प्रमुख क्षेत्रों की पहचान करने की आवश्यकता पर बल दिया और पारस्परिक हित के क्षेत्रों में सीएसआईआर-नीरी के साथ काम करने में भी रुचि व्यक्त की। डॉ. कन्नन ने कहा कि अंतर्विषयी शोध आज के समय की मांग है। बदलती वैश्विक प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए उन्होंने कहा कि 20वीं सदी ने संधारणीयता पर विचार किए बिना विकास पर ध्यान केंद्रित किया जबकि 21वीं सदी अब संधारणीयता के साथ विकास पर केन्द्रित है। उन्होंने आज की चुनौतियों के लिए व्यक्तिगत प्रतिभा (विज्ञान) और सहयोगी विषय (प्रौद्योगिकी) दोनों की



आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने वैज्ञानिकों से वांछित उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त करने के लिए एकजुट होकर एक संगठित टीम के रूप में काम करने का आग्रह किया। उन्होंने विज्ञान और नवाचार को आगे बढ़ाने में सार्वजनिक-निजी भागीदारी के महत्व पर भी प्रकाश डाला। हाल ही में एक सफलता का हवाला देते हुए, उन्होंने बताया कि भारतीय किसानों द्वारा उपयोग किए जाने वाले 99% पोटेशियम का आयात किया जा रहा था, स्पेंट वॉश से पोटेशियम का निष्कर्षण एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है। उन्होंने उभरते अवसरों की पहचान करने की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए सादृश्यता और डेटा विश्लेषण का लाभ उठाने का संदेश दिया।

अपने स्वागत भाषण में सीएसआईआर-नीरी के निदेशक डॉ. एस. वेंकट मोहन ने संस्थान की स्थापना के बाद से इसकी महत्वपूर्ण

उपलब्धियों को रेखांकित किया। उन्होंने प्रमुख परियोजनाओं और द्विपक्षीय कार्यक्रमों सहित हाल के अनुसंधान एवं विकास परिणामों के बारे में भी जानकारी दी।

उन्होंने संस्थान द्वारा नियोजित कुछ आगामी पहलों के बारे में भी जानकारी साझा की।

इस अवसर पर सीएसआईआर-नीरी न्यूजलेटर और ब्रोशर का विमोचन किया गया। सीएसआईआर-नीरी की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. देबिशी खान ने कार्यक्रम का संचालन किया और वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक प्रकाश कुंभारे ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस कार्यक्रम में स्कूल और कॉलेजों से लगभग 1500 विद्यार्थियों ने संस्थान का भ्रमण किया, जहां उन्होंने व्यावहारिक प्रदर्शन देखे और प्रयोगशालाओं में सीएसआईआर-नीरी वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की।

प्रगति, विकास और आशा : सीएसआईआर समाचार



इस अवसर पर एक विज्ञान मॉडल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा विजेताओं को पुरस्कार वितरित किया गया। प्रथम श्रेणी (8वीं से 10वीं कक्षा) के अंतर्गत पहला पुरस्कार भगवानदास पुरोहित विद्या मंदिर, आष्टी (खुर्द), नागपुर को 'मैरीगोल्ड अपशिष्ट का ग्राफीन में अपसाइकलिंग' पर उनके मॉडल के लिए; दूसरा पुरस्कार ब्लाईंड रिलीफ संगठन, नागपुर के मुंडले इंग्लिश मीडियम स्कूल, नागपुर को 'सौर ऊर्जा संचालित स्मार्ट कृषि प्रणाली' मॉडल के लिए तथा तीसरा पुरस्कार केन्द्रीय विद्यालय (केवी) सीआरपीएफ, नागपुर को 'वायु प्रदूषण से स्याही कनवर्टर' पर उनके मॉडल के लिए तथा लाल बहादुर शास्त्री हिंदी हाई स्कूल, एनएमसी, हनुमान नगर, नागपुर को 'जल स्तर चेतावनी प्रणाली' पर उनके मॉडल के लिए सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। दूसरी श्रेणी (10वीं-12वीं कक्षा) के अंतर्गत पहला पुरस्कार भगवानदास पुरोहित विद्या मंदिर, श्रीकृष्ण नगर, नागपुर को 'सुरक्षा निगरानी के साथ हरित सुगंध प्रणाली' मॉडल के लिए; दूसरा



पुरस्कार सांदीपनी जूनियर कॉलेज, नागपुर को 'अपशिष्ट और अपशिष्ट प्रबंधन एवं मलिन जल का उपचार के लिए', तीसरा पुरस्कार जेएन टाटा पारसी गर्ल्स हाई स्कूल, नागपुर को 'एयर प्यूरीफायर: कार्बन रॉड इलेक्ट्रोस्विंग एडसोर्प्शन सिस्टम' मॉडल के लिए तथा सांत्वना पुरस्कार आर्मी पब्लिक स्कूल, कैम्पटी को 'शैवाल से जैव ईंधन का उत्पादन' के लिए प्रदान किया गया।

सीएसआईआर-नीरी के अधिकारियों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए स्थापना दिवस पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ. रोमा विश्वास मंडल, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-नीरी को 'सर्वश्रेष्ठ वरिष्ठ' पुरस्कार मिला।

डॉ. रोशन वाथोर, वैज्ञानिक, सीएसआईआर-नीरी को 'श्रेष्ठ जूनियर वैज्ञानिक पुरस्कार। श्री सतीश लोखंडे, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी को 'सर्वश्रेष्ठ तकनीकी अधिकारी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री सत्येंद्र, वरिष्ठ रिसर्च फैलो, सीएसआईआर-नीरी को 'स्वर्गीय श्री पी.एस. दत्त स्मारक पुरस्कार के अंतर्गत 'श्रेष्ठ युवा शोधकर्ता' पुरस्कार प्रदान किया गया। सब-वर्टिकल एक्सिलेन्स पुरस्कार को संयुक्त रूप से को पर्यावरण प्रभाव आकलन, ऑडिट और योजना और अपशिष्ट जल प्रबंधन सब-वर्टिकल के लिए प्रदान किया गया।

सीएसआईआर-नीरी स्थापना दिवस समारोह के एक भाग के रूप में सीएसआईआर-नीरी स्टाफ क्लब और जीएसके ब्लड सेंटर, नागपुर के सहयोग से सीएसआईआर-नीरी परिसर में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।